मनु और समय

आचार्य माधव शास्त्री

सूर्योदय से सूर्यास्त तक की अवधि दिवस के रूप में होती है और सूर्यास्त से सूर्योदय के पहले की अवधि रात्रि के रूप में मानी जाती है तथा एक दिन व एक रात के यमल को अहोरात्र कहा जाता है इस दौरान 24 घण्टे का कालखण्ड का मान होता है। वैदिक काल से अहन् को पुंलिङ्ग शब्द रूप तथा रात्रि को स्त्रीलिङ्ग शब्द रूप में प्रतिपादित किया गया है। पृथ्वी वासियों की कालगणना के आधार माने गए हैं,

सम्वत्सर:परिवत्सर इडावत्सर एव च।

अनुवत्सरो वत्सरश्च विदुरेवं प्रभाष्यते।।भा.पु.3स्क.11अ.14

नक्षत्रों की वार्षिक गति के कारण वत्सर, चन्द्र की वार्षिक गति के कारण प्रचलित अनुवत्सर,सवन की वार्षिक गति के कारण प्रचलित इडावत्सर , बृहस्पति की वार्षिक गति के अनुसार परिवत्सर तथा सूर्य की वार्षिक गति के अनुसार सम्वत्सर माना गया है। वैदिक काल से ही प्रचलित है कि एक दिन के 12 घण्टे व एक रात के भी 12 घण्टे माने गए हैं, जिन्हें 30 घटी का दिवस तथा 30 घटी की रात के रूप में व्यक्त किया गया है।घटी पल व विपल को घण्टा मिनट और सैकण्ड नाम की संज्ञा दी गयी है।

15 अहोरात्र की कालावधि की कृष्ण पक्ष तथा अन्य 15 अहोरात्र की कालावधि की शुक्ल पक्ष संज्ञा होती है।इन दोनों पक्षों के संयोग होने पर एक माह की अवधि प्राप्त होती है। दिवस,पक्ष व माह को स्त्री व पुरुष के रूप में माने जाने के कारण इनके उपभोग से नये कालखण्ड को जाना गया है। पितरों का शुक्ल पक्ष व कृष्ण पक्ष दोनों के संयोग को मात्र एक अहोरात्र माना जाता है। पितरों के लिए कृष्ण पक्ष की अष्टमी को सूर्योदय,अमावस्या को मध्यान्ह काल तथा शुक्ल पक्ष की सप्तमी को सूर्यास्त, पूर्णिमा को मध्य रात्रि होती है।इस प्रकार मानवीय एक माह पितृयोनि के लिए एक दिन व रात होती है।

मनुष्य के बारह महीने पितरों के बारह दिन के समान होते हैं। सूर्यपथ इस भूलोक को दो अयनों में विभक्त करता है, पहला छ:माह उत्तरायण व अन्य छ: महीने का दक्षिणायन ये भी देवयोनि के लिए एक दिन व एक रात के समान होती है। इन दोनों अयनों के संयोग से एक दैवीय अहोरात्र उत्पन्न होता है। उत्तरायण को पुरुष व

दक्षिणायन को स्त्री संज्ञक बताया गया है इन दोनों के संयोग से एक दैवीय दिवस उत्पन्न होता है। जब विषुवत् पर दिन सबसे छोटा होता है तब दैवीय सूर्योदय अर्थात् 22 दिसम्बर,जब रात व दिन की अवधि समान होती है तब दैवीय मध्यान्ह काल 21मार्च, सबसे बड़ा दिन व रात सबसे छोटी होती है 21जून तब दैवीय सूर्यास्त तथा जब पुन: दिन रात समान हो जाते हैं वह काल दैवीय मध्य रात्रि (22सितम्बर) होती है । उपर्युक्त अवधि को दैवीय अहोरात्र कहा गया है अत: मानवीय बारह महीने को एक वर्ष, मानवीय 30 माह पितरों का एक वर्ष तथा मानवीय 360 वर्ष दैवीय एक वर्ष के समान हैं।

भगवान सूर्य नारायण और पृथ्वी की इस प्रकार गति, परिभ्रमण व चलन के कारण सूक्ष्म तथा विराट काल (समय)का मापन किया जाता रहा है।

धर्मेणैव मुनिश्रेष्ठा:शतरूपा व्यजायतासा तु वर्षायुतं तम्वा तप:परमदुश्चरम्।

शतारूपा रूपी पृथ्वी के अपने कक्ष पर परिभ्रमण अयुत वर्ष तक करती हुई एक मनु को (विराट कालखण्ड की अवधि)को प्राप्त किया। मेरा तात्पर्य यह है, कि मनु नामक संज्ञा एक विस्तृत कालावधि के मापन को बताने का प्रयास है।

दिवञ्च पृथिवीञ्चैव,महिम्ना व्याप्य तिष्ठति।

विराजमसृजत् विष्णु:सोऽसृजत् पुरुषं विराट्।।

भगवान विष्णु ने अपनी महान् विभूति की महिमा के बल से पृथ्वी और अन्तरिक्ष को घेर कर मनु को प्रकट किया।

जिस प्रकार दिवस व रात्रि का रूप है लेकिन दिव्य है, माह और वर्ष का नाम रूप व गुण हैं, लेकिन दिव्य हैं तथैव मनु भी नाम रूप हैं लेकिन वह भी दिव्य है।

जिस प्रकार दिन,रात,पक्ष,माह और वर्ष होते हैं लेकिन इनका मानवीय रूप नहीं होता सरलता से ज्ञान करवाने के लिए इन्हें मानवीय व्यवहार में प्रस्तुत किया है, तथैव मनु भी मानवीय व्यवहार में अवधि की मापन प्रणाली है।

मनु को प्रकट किया। मनु चौदह होते हैं 1.स्वायम्भुव मनु 2.स्वारोचिष मनु 3.उत्तम मनु 4.तामस मनु 5.रैवत मनु 6.चाक्षुष मनु 7.वैवस्वत मनु 8.सावर्णि मनु 9.दक्षसावर्णिमनु 10.ब्रह्मसावर्णि मनु 11 धर्मसावर्णि

मनु 12.रुद्रसावर्णि मनु 13.देव सावर्णि मनु 14.इन्द्रसावर्णि मनु

चत्वारिश्रृङ्गा:त्रयो अस्य पादा:

द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽस्य,त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मृत्यान् आविवेश।।

इस वृषरूप वर्ष के चार श्रृङ्ग (1) 22दिसम्बर(2)21मार्च(3)21जून और (4)22सितम्बर

इसके गतियुक्त तीन चरण शीत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु और वर्षा ऋतु होते हैं । दो मस्तिष्क उत्तरायण व दक्षिणायन माने जाते हैं, सात वार हस्त माने गए हैं इस प्रकार यह काल मनुष्य व चराचर में पूर्ण रूप से व्यापक है।

काल अवधि की गति की गणना मानवीय 24 मिनटों में पितरों का एक मिनट तथा मानवीय 4 दिवस दैवीय एक मिनट होता है। मैंने यहाँ काल की अति सूक्ष्म गणना प्रस्तुत की है, जिसको बृहत् स्तर पर भी आंका जा सकता है।